

**उभयार्थक वि.** (तत्.) 1. दो अर्थों वाला 2. ला.अ. भ्रमोत्पादक।

**उभयालंकार पुं.** (तत्.) दो अलंकारों का मिश्रित रूप। टि. इसके दो रूप होते हैं। संसृष्टि एवं संकर।

**उभयावतल (उभय+अवतल) पुं.** (तत्.) भौ. दोनों तरफ से अवतल biconcave दे. अवतल।

**उभयोत्तल पुं.** (तत्.) भौ. दोनों ओर से उत्तल biconvex दे. उत्तल।

**उभयोष्ठ्य पुं.** (तत्.) दोनों होठों से संबंधित। भाषा. (वह स्वन) जो दोनों ओठों के पास आने के बाद उनके खुलने पर उच्चरित हो जैसे पवर्ग वाले व्यंजन पर्वा. द्वि-ओष्ठ्य। bilabial

**उभरन स्त्री** (तत्.) उमड़ने की क्रिया, (दबी हुई चीज के) प्रकट होने का भाव, उकसने का भाव। प्रयो. एक घुटी साँस की उभरन के साथ-साथ ही संत बेनी माधव का रूँधा हुआ कंठ-स्वर अकस्मात् फूटा -मानस का हंस.अ.ला. नागर।

**उभरना अ.क्रि.** (तद्.) 1. उमड़ना, ऊपर उठना 2. प्रकट होना 3. (रहस्य) खुलना 4. बढ़ना 5. अंकुरण (विद्रोह) 6. धन-मान की वृद्धि होना 7. उकसना।

**उभरौंहा वि.** (देश.) 1. उभरता हुआ 2. उभरने वाला।

**उभाड़ पुं.** (देश.) उठान, ऊँचाई।

**उभाड़ना स.क्रि.** (तद्.) दे. उभारना।

**उभार पुं.** (तद्.) 1. ऊपर उठने का भाव 2. उभरा हुआ भाग 3. वृद्धि, ऊँचाई।

**उभारदार वि.** (तद्.+फा.) 1. उठा हुआ, उभरा हुआ 2. सतह से ऊँचा।

**उभारना स.क्रि.** (तद्.) किसी वस्तु को धीरे-धीरे ऊपर उठाना 2. बढ़ाना 3. भड़काना 4. उकसाना।

**उभारमूर्ति स्त्री** (तत्.) किसी समतल आधार पर बनाई हुई त्रि-आयामी कलाकृति, यह कलाकृति

दो प्रकार की हो सकती है। उभरी हुई, धँसी हुई या अंदर खुदी हुई, उभरी मूर्ति को उच्च मूर्ति high relief तथा धँसी मूर्ति को अधोगत मूर्ति low relief कहते हैं।

**उभिटना अ.क्रि.** (तद्.) (तत्.-उद्वेष्टन) 1. संकोच करना 2. हिचकिचाना 3. ठिठकना 4. भटकाना।

**उभेख स्त्री.** (तद्.) (तत्.-उन्मेष) लालसा, इच्छा, उमंग, एषण।

**उभेठी/उभैठी स्त्री.** (देश.) ऐंठन, मरोड़ना, उमेठन की क्रिया या भाव, ऐंठन करने वाली, अकड़ी हुई, रूठी हुई।

**उमंग स्त्री.** (तत्.) 1. सुखदायी मनोवेग 2. जोश, उल्लास 3. चित्त का उभाड़ प्रयो. द्रौपदी को वरण करके लौटते हुए अर्जुन उमंग से भरे थे।

**उमंगना अ.क्रि.** (तद्.) उमंग में होना, उल्लसित होना, जोश में आना प्रयो. उमंगते जननी मुख देखते। किलकते हँसते जब लाडिले (प्रिय प्रवास अष्टम सर्ग)।

**उमंगित वि.** (तत्.) उमंग से युक्त, उत्साहपूर्ण।

**उमंथ पुं.** (तत्.) मथने या बिलोने की क्रिया या भाव।

**उमगना अ.क्रि.** (तद्.) 1. उमंग या उत्साह से युक्त होना, 2. उमड़ना, घनीभूत होना 3. अधिकता के कारण सीमा से बाहर हो जाना।

**उमगान पुं.** (तद्. उमंग) 1. उमगने का भाव, उमंग 2. उमड़ने का भाव।

**उमड़ स्त्री.** (तद्.) 1. उमड़ने की क्रिया या भाव 2. अधिकता, बाढ़।

**उमड़न स्त्री.** (तद्.) दे. उमड़।

**उमड़ना अ.क्रि.** (तद्.) 1. पानी या किसी द्रव वस्तु का अधिकता के कारण ऊपर उठना, भर कर ऊपर आना, बह चलना 2. बादलों का उठकर फैलना और छा जाना 3. जोश में आना 4. क्षुब्ध होना प्रयो. सावन-भादों के महीने में